मोहन राकेश का सामान्य परिचय

जन्म : मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1925 को पंजाब के अमृतसर में हुआ। इनका बचपन का नाम मदन मोहन गुगलानी था। मोहन राकेश का बचपन दादी माँ के कड़े अनुशासन में व्यतीत हुआ, क्योंकि इनकी दादी अनुशासन प्रिय महिला थी। मोहन राकेश बहुत ही आत्मकेन्द्रित व्यक्ति थे।

शिक्षा : मोहन राकेश एक होनहार छात्र थे। 16 वर्ष की आयु में शास्त्री परीक्षा पास की तथा एम.ए. हिन्दी, संस्कृत और एम.ए. अंग्रेजी की परीक्षा भी पास की।

माता-पिता : मोहन राकेश की माता जी का नाम बचन कौर था, जो कि धार्मिक विचारों वाली महिला थी। मोहन राकेश अपनी माँ के बारे में कहते हैं कि "अम्मां धरती की तरह शांत रहती है और मेरे ~~प्रत्येक~~ हर आवेश उद्वेग को वें धरती की तरह ही सह लेती हैं। वे कहते हैं कि सच मेरी माँ बहुत बड़ी हैं - बहुत ही बड़ी। काश! कि मुझमें माँ के इन गुणों का शतांश भी होता।" मोहन राकेश का हृदय माँ के लिए अति संवेदनशील था।

मोहन राकेश के पिता का नाम कर्मचन्द गुगलानी

था जो पेशे से शहर के वकील थे। जब मोहन राकेश मात्र सोलह वर्ष के हुए तो इनके पिता का स्वर्गवास हो गया।

अध्यापन कार्य : इन्होंने अध्यापन का कार्य बम्बई, शिमला, जालन्धर तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में किया, परन्तु इस कार्य में विशेष रुचि न होने के कारण इन्होंने त्यागपत्र दे दिया और फिर स्वतंत्र लेखन शुरु किया। जीवनभर स्वतंत्र लेखन ही इनकी आजीविका का आधार रहा।

प्रेरणास्त्रोत : मोहन राकेश अपने लेखन की प्रेरणा का मूल स्त्रोत अपने पिता को मानते हैं। घर में साहित्यिक माहौल के कारण ही उनकी लेखन में रुचि उत्पन्न हुई।

मोहन राकेश का बाह्य व्यक्तित्व : मोहन राकेश का साहित्य जितना सुन्दर था, उतना ही सुन्दर उनका व्यक्तित्व भी था। मोहन राकेश जब भी किसी से मिलते थे तो ऊँची आवाज़ में हँसते थें। उनकी हँसी के संबंध में कमलेश्वर कहते हैं "वह हँसता है तो तारों पर बैठी हुई चिड़िया पंख फड़फड़ाकर उड़ जाती है और

राह चलते ऐसे चौंककर देखते जैसे किसी को दौरा पड़ गया हो।"

सम्मान : संगीत नाटक अकादमी द्वारा सम्मानित

निधन : मोहन राकेश को 3 जनवरी 1972 को अचानक सीने में दर्द उठा और इनकी मृत्यु हो गई।

मोहन राकेश का रचना संसार : मोहन राकेश के साहित्य का आधार जीवन के अनुभव हैं। अनुभूति को रचना के रूप में डालने का प्रयास किया है। मोहन राकेश ने उत्तम कोटि की रचनाएँ लिखी हैं जो निम्नानुसार हैं —

1. नाट्य कृतियाँ :- आषाढ़ का एक दिन
लहरों के राजहंस
आधे अधूरे
पैर तले की ज़मीन
(अधूरा, कमलेश्वर ने पूरा किया)

2. उपन्यास साहित्य :- अन्धेरे बंद कमरे
न आने वाला कल
अन्तराल

3. कहानी संग्रह :- इंसान के खण्डर
नये बादल
जानवर और जानवर
एक और जिंदगी
फौलाद का आकाश
चेहरे, क्वार्टर, वारिस

4. निबन्ध संग्रह :- परिवेश
बकलम खुद
साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि

5. यात्रा विवरण :- आखिरी चट्टान तक

6. जीवनी संकलन :- समय सारथी

7. डायरी साहित्य :- मोहन राकेश की डायरी

8. एकांकी साहित्य :- अण्डे के छिलके अन्य एकांकी तथा
बीज नाटक
रात बीतने तक तथा अन्य ध्वनि नाटक
सत्य और कल्पना

9. अनुवाद साहित्य :- मोहन राकेश ने संस्कृत से मृच्छकटिक
तथा शाकुन्तला इन दोनों नाटकों का
हिन्दी अनुवाद किया। अंग्रेजी से हिन्दी

में 'एक औरत के चेहरे' तथा 'हिरोशिमा के फूल' का अनुवाद किया है।

मोहन राकेश का व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों प्रभावक रहे हैं। उनकी रचनाएँ ही उनके व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित करती हैं। मोहन राकेश आधुनिक नाट्य साहित्य को नई दिशा देने वाले प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने हिन्दी गद्य साहित्य को आधुनिक परिवेश के साथ सम्मिलित करने में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके द्वारा रचित साहित्य में समाज के विभिन्न पात्रों के जीवन का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। मानवीय संवेदना पर आधारित इनका साहित्य अत्यंत रोचक एवं प्रभावपूर्ण है।

मोहन राकेश के साहित्य में पात्रों की स्थिति और मन: स्थितियों का ऐसा सच्चा चित्रण है कि पाठक वर्ग पढ़ने के साथ - साथ महसूस भी करता है। वह एक ऐसे नाटककार थे, जिन्होंने हिन्दी नाटककला को रंगमंचीय क्षेत्रता और पहचान दी। हिंदी का आधुनिक रंगमंच उन्हें अपना प्रमुख

प्रेरणा पुरुष मानता है । अतः मोहन राकेश बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार थे । उनकी रचनाओं में वर्तमान जीवन की आधुनिकता, अनुभूति का सत्य और अभिव्यक्ति की जीवंतता व्यक्त हुई है। उनका साहित्य उनकी अभूतपूर्व प्रतिभा और सृजन शक्ति का प्रमाण है।

मोहन राकेश आधुनिक काल के हिन्दी साहित्यकारों में विशिष्ट स्थान के अधिकारी हैं। इनकी नाट्य कृतियाँ अपने ढंग की अनूठी कृतियाँ हैं और रंगमंच का ध्यान कर यह कृतियाँ लिखी गई हैं।

भाषा के कुशल शिल्पी मोहन राकेश एक प्रबुद्ध चिन्तक और मनस्वी साहित्यकार थे। अपनी बहुमुखी प्रतिभा से उन्होंने सरस्वती के भण्डार में जो श्रीवृद्धि की है उसके लिए हिन्दी जगत उनका चिरकाल तक ऋणी रहेगा।